रानी अवंतीबाई

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रथम महिला शहीद वीरांगना थीं। रानी अवंती बाई का जन्म 16 अगस्त 1831 में मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के मनकेड़ी में हुआ था। उनके पिता जमींदार राव जुझार सिंह एवं माता कृष्णा बाई थीं।

रानी अवंती बाई लोधी का विवाह मंडला जिले (वर्तमान में जिला डिंडौरी) के रामगढ़ के राजा विक्रमादित्य से हुआ था। विक्रमादित्य बहुत ही योग्य और कुशल शासक थे लेकिन धार्मिक प्रवृति के होने के कारण वह राजकाज में कम और धार्मिक कार्यो में ज्यादा समय देते थे। उनके दो पुत्र शेरसिंह और अमानसिंह छोटे ही थे कि विक्रमादित्य विक्षिप्त हो गये और राज्य का सारा भार अवंतीबाई के कन्धों पर आ गया।

यह समाचार जब अंग्रेजी सरकार को मिला तो उसने 13 सितम्बर 1851 को रामगढ़ राज्य को कोर्ट ऑफ़ वार्डस के अधीन कर प्रशासन संभालने हेतु तहसीलदार नियुक्त कर दिया। रानी अवंती बाई लोधी इस अपमान के खून का घूँट पीकर रह गयी किन्तु उन्होंने उसी वक़्त प्रतिज्ञा की कि वह तब तक चैन से नही बैठेंगी जब तक देश को स्वाधीन नहीं करा लेंगी।

रानी अवंतीबाई लोधी ने अंग्रेजों के खिलाफ मध्य भारत के ठाकुरों, जागीरदारों और राजाओं को संगठित कर अंग्रेजों के विरोध का फैसला किया। क्रान्ति का संदेश गाँव-गाँव पहुँचाने के लिए अवंतीबाई ने सभी को अपने हाथ का लिखा पर्चा भिजवाया “देश और आन के लिए मर मिटो या फिर चूड़िया पहनो, तुम्हें धर्म इंसान की सौगंध है जो इस कागज का पता दुश्मन को दो"।

मध्य भारत के सभी देशभक्त राजाओं और जमींदारों ने रानी के साहस और शौर्य की सराहना करते हुए उनकी योजनानुसार अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए रानी अवंती बाई लोधी ने रामगढ़ से कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधिकारियों को भगा दिया और राज्य एवं क्रांति की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

मध्यभारत के विद्रोही नेता रानी अवंती बाई लोधी के नेतृत्व में एकजुट होने लगे। वीरांगना अवंतीबाई लोधी ने अपने साथियों के सहयोग से अंग्रेजों पर हमला बोलकर घुघरी, रामनगर, बिछिया इत्यादि क्षेत्रों से अंग्रेजी राज का सफाया कर दिया। अंग्रेज रानी अवंती बाई लोधी और मध्यभारत के इस विद्रोह से चिंतित हो उठे।

मंडला को अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त कराने के उद्देश्य से अवंतीबाई लोधी की मजबूत क्रांतिकारी सेना और अंग्रेजी सेना में जोरदार मुठभेड़ें हुईं। अंततः मंडला का डिप्टी कमिश्नर वाडिंगटन रानी के शौर्य से भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ और जीत

का मैदान रानी अवंतीबाई लोधी के नाम रहा। इसके बाद मंडला भी रानी अवंतीबाई लोधी के अधिकार में आ गया और रानी ने कई महीनों तक मंडला पर भी शासन किया।

मंडला का डिप्टी कमिश्नर वाडिंगटन ने रानी अवंती बाई लोधी से अपने अपमान का बदला लेने अपनी सेना को पुनर्गठित कर रामगढ़ के किले पर हमला बोल दिया जिसमें रीवा नरेश की सेना भी अंग्रेजों का साथ दे रही थी। अवंतीबाई लोधी के नेतृत्व में सेना ने अंग्रेजी सेना का जमकर मुकाबला किया लेकिन ब्रिटिश सेना संख्या बल एवं युद्ध सामग्री में रानी की सेना से कई गुना बलशाली थी अत: स्थिति को भांपते हुए रानी अवंती बाई लोधी ने किले के बाहर निकलकर देवहारगढ़ की पहाड़ियों की तरफ प्रस्थान किया।

रानी अवंती बाई लोधी के रामगढ़ छोड़ने के बाद अंग्रेजी सेना ने रामगढ़ के किले को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया और खूब लूटपाट भी की और रानी अवंती बाई लोधी का पता लगाती हुई देवहारगढ़ की पहाड़ियों के निकट पहुँच गई। अंग्रेजी सेना ने चारों तरफ से रानी अवंती बाई लोधी की सेना पर धावा बोल दिया। रानी अवंती बाई लोधी की सेना बेशक थोड़ी-सी थी लेकिन उसने कई दिनों तक अंग्रेज़ों से जमकर मुकाबला कर अंग्रेजी सेना को लोहे के चने चबवा दिए। इस युद्ध में रानी अवंती बाई लोधी की सेना के कई सैनिक हताहत भी हुए और रानी को खुद दाएँ हाथ में गोली लगी और तलवार के साथ-साथ बंदूक भी छूटकर गिर गई।

20 मार्च 1858 को 27 वर्ष की छोटी सी उम्र में युद्ध में अपने आपको चारों तरफ़ से अंग्रेज सेना से घिरा हुआ देख रानी अवंती बाई लोधी ने अपने अंगरक्षक से कटार छीनकर स्वयं को कटार भोंककर देश के लिए बलिदान कर दिया।

शौर्य, साहस, पराक्रम एवं बलिदान की मूर्ति रानी अवंतीबाई लोधी का भारत की आजादी में बहुत बड़ा योगदान है जिससे उनका नाम पूरे भारत में अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी के नाम से प्रसिद्ध है।

मध्य भारत की प्रमुख नदी नर्मदा नदी पर जबलपुर जिले में बने बरगी बाँध की एक प्रमुख सिंचाई परियोजना को रानी अवंतीबाई लोधी सागर परियोजना का नाम दिया गया है। पोस्ट डिपार्टमेंट ने भी रानी अवंतीबाई के नाम का स्टैम्प जारी किया है। महाराष्ट्र सरकार ने भी रानी अवंतीबाई के नाम का स्टैम्प जारी किया है।